Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

हिंदी

N-301

Chapter wise Reference Book Including MCQ's & Many Solved Sample Papers

Based on

N.I.O.S. *Class* – XII

National Institute of Open Schooling

By : Sanjay Jain

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 400/-

Content

हिंदी

Based on: NATIONAL INSTITUTE OF OPEN SCHOOLING – XII

Sample Question Paper–1 (Solved) 1-7

Sample Question Paper–2 (Solved) 1-7

Sample Question Paper–3 (Solved) 1-7

Sample Question Paper–4 (Solved) 1-7

Sample Question Paper–5 (Solved) 1-8

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. निर्गुण भक्तिकाव्य (कबीर और जायसी) 1

2. सगुण भक्तिकाव्य (तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई) 12

3. रीतिकाव्य (बिहारी और पद्माकर) 28

4. छायावादी काव्य (निराला और जयशंकर प्रसाद) 38

5. उत्तर छायावादी कविता (दिनकर और बच्चन) 49

6. नयी कविता (अज्ञेय और भवानीप्रसाद मिश्र) 56

7. साठोत्तरी कविता (सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एवं दुष्यंत कुमार) 65

8. समकालीन कविता (आज की कविता) 75
   (राजेश जोशी और नरेश सक्सेना)

9. चीफ की दावत 85

10. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ 94

11. दो कलाकार 101

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

12. जिजीविषा की विजय 110

13. सुभद्रा कुमारी चौहान 117

14. कुटज 126

15. ठेस 134

16. रीढ़ की हड्डी 145

17. अंडमान डायरी 151

18. यक्ष-प्रश्न 158

19. लेखन-कौशल : अनुच्छेद लेखन, फीचर तथा रिपोर्टिंग 166

20. कार्यालयी पत्राचार 177

21. टिप्पण और प्रारूपण 191

22. सभा एवं मंच संचालन और उद्घोषणा 202

23. हिंदी के विविध प्रयुक्ति-क्षेत्र 209

24. हिंदी और जनसंचार माध्यम 220

25. हिंदी और प्रौद्योगिकी 241

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Solved Sample Paper - 1

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

हिंदी– XII

N-301

समय : 3 घंटे] [कुल अंक : 100

निर्देश: *(i)* इस प्रश्न-पत्र में कुल 34 प्रश्न हैं। *(ii)* सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। *(iii)* प्रश्न संख्या 1 से 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं और प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित है। आप सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए। कुछ प्रश्नों में विकल्प भी दिए गए हैं। आपको केवल एक प्रश्न का उत्तर देना है। *(iv)* प्रश्न संख्या 21 से 25 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें 3 अंक के दो प्रश्न, 7 अंक के दो प्रश्न तथा 10 अंक का एक प्रश्न है तथा विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(v)* प्रश्न संख्या 26 से 34 तक वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। लघुत्तरीय प्रश्न-1 के अंतर्गत 4 अंक के दो तथा लघूत्तरीय प्रश्न-2 के अन्तर्गत 5 अंक के दो प्रश्न हैं। दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-1 के अंतर्गत 6 अंक के चार तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-2 के अंतर्गत 8 अंक का एक प्रश्न है। इनमें से कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए।

दिए गए पाठ्यक्रम पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए–

प्रश्न 1. कार्यालय ज्ञापन अथवा अर्द्धसरकारी पत्रों का प्रयोग किया जाता है–

(क) भारत सरकार के मंत्रालयों में आपसी पत्र व्यवहार में
(ख) भारत सरकार के मंत्रालयों में शासकीय पत्र व्यवहार में
(ग) प्रदेश सरकार के मंत्रालयों में कार्यालयी पत्र व्यवहार में
(घ) प्रदेश सरकार के मंत्रालयों में सूचना देने के लिए

उत्तर–(क) भारत सरकार के मंत्रालयों में आपसी पत्र व्यवहार में।

अथवा

कार्यालय द्वारा कर्मचारी की तैनाती संबंधी सूचना जारी की जाती है–

(क) परिपत्र द्वारा (ख) आदेश द्वारा
(ग) टिप्पण द्वारा (घ) ज्ञापन द्वारा

उत्तर–(क) टिप्पण द्वारा।

प्रश्न 2. कोलकाता की हिंदी पर प्रभाव है–

(क) असमिया का (ख) बांग्ला का
(ग) तिब्बती का (घ) मिजो का

उत्तर–(ख) बांग्ला का।

अथवा

सामयिक और रोजमर्रा के टिप्पण को कहते हैं–

(क) नेमी टिप्पण (ख) नियमित टिप्पण
(ग) अंतराविभागीय टिप्पण (घ) अंतर्विभागीय टिप्पण

उत्तर–(ख) नियमित टिप्पण।

प्रश्न 3. 'कुटज' पाठ के आधार पर शिवालिक शृंखलाएँ किसका प्रतिनिधित्व करती हैं?

(क) हिमालय पर्वत पर दूर तक फैली वनस्पति का
(ख) हिमालय पर्वत पर फैली सूखी झाड़ियों का
(ग) महादेव के अलकजाल के निचले हिस्से का
(घ) महादेव के जटाजूट के ऊपरी हिस्से का

उत्तर–(ग) महादेव के अलकजाल के निचले हिस्से का।

अथवा

लेखक की दृष्टि में 'कुटज' को 'कूटज' कहना अधिक उचित क्यों हैं?

(क) अद्‌भुत जिजीविषा के कारण
(ख) मौसम की मार से बेअसर रहने के कारण
(ग) छोटा-सा शानदार वृक्ष होने के कारण
(घ) गिरिकूट पर उत्पन्न होने के कारण

उत्तर–(घ) गिरिकूट पर उत्पन्न होने के कारण।

प्रश्न 4. राजा जनक के साथ कुटज की तुलना क्यों की गई है?

(क) मन पर नियंत्रण रखने के कारण
(ख) अपने स्वार्थ पर नियंत्रण रखने के कारण
(ग) सुख-दुख में समान भाव से रहने के कारण
(घ) विषय-वासनाओं पर नियंत्रण रखने के कारण

उत्तर–(ग) सुख-दुख में समान भाव से रहने के कारण।

अथवा

'कुटज' पाठ के आधार पर लिखिए कि दूसरे के मन का छंदावर्तन कौन करता है।

(क) जिसका मन नियंत्रण में नहीं है
(ख) जो विषय-वासनाओं के अधीन है
(ग) जो मिथ्याचारों से मुक्त है
(घ) जो भोगों से मुक्त है

उत्तर–(क) जिसका मन नियंत्रण में नहीं है।

प्रश्न 5. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का प्रमुख पात्र है–

(क) शंकर (ख) उमा
(ग) रामस्वरूप (घ) गोपाल प्रसाद

उत्तर–(ख) उमा।

Solved Sample Paper - 2

Based on NIOS (National Institute of Open Schooling)

हिंदी– XII

N-301

समय : 3 घंटे] **[कुल अंक : 100**

निर्देश: *(i)* इस प्रश्न-पत्र में कुल 34 प्रश्न हैं। *(ii)* सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। *(iii)* प्रश्न संख्या 1 से 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं और प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित है। आप सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए। कुछ प्रश्नों में विकल्प भी दिए गए हैं। आपको केवल एक प्रश्न का उत्तर देना है। *(iv)* प्रश्न संख्या 21 से 25 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें 3 अंक के दो प्रश्न, 7 अंक के दो प्रश्न तथा 10 अंक का एक प्रश्न है तथा विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। *(v)* प्रश्न संख्या 26 से 34 तक वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। लघुत्तरीय प्रश्न-1 के अंतर्गत 4 अंक के दो तथा लघूत्तरीय प्रश्न-2 के अन्तर्गत 5 अंक के दो प्रश्न हैं। दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-1 के अंतर्गत 6 अंक के चार तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-2 के अंतर्गत 8 अंक का एक प्रश्न है। इनमें से कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए।

दिए गए पाठ्यक्रम पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए–

प्रश्न 1. 'भरत का भ्रातृप्रेम' में भरत सबसे अधिक दोषी मानते हैं–

(क) स्वयं को (ख) कैकेयी को
(ग) स्वयं के भाग्य को (घ) दशरथ को

उत्तर–(क) स्वयं को।

अथवा

'भरत का भ्रातृप्रेम' में भरत के नेत्रों का सौंदर्य बताने के लिए किसका उपमान प्रयुक्त किया गया है–

(क) कमल (ख) जल
(ग) नेह (घ) मुक्ता

उत्तर–(क) कमल।

प्रश्न 2. 'भरत का भ्रातृप्रेम' में किसके वचन-चातुर्य का परिचय मिलता है–

(क) भरत (ख) राम
(ग) वशिष्ठ (घ) कैकेयी

उत्तर–(ख) राम।

अथवा

'भरत का भ्रातृप्रेम' पाठ में आए उदाहरण 'फरइ कि कोदव बालि सुसाली' की जगह कौन-से विकल्प का प्रयोग किया जा सकता है–

(क) आक के फूल में खुशबू कैसे आएगी
(ख) दूसरों के लिए गड्ढा खोदने वाला खुद उसमें गिरता है
(ग) आसमान पर थूकने से अपना ही नुकसान होता है
(घ) बहुत बढ़-चढ़कर बोलने से अपमानजनक स्थिति होती है

उत्तर–(क) बहुत बढ़-चढ़कर बोलने से अपमानजनक स्थिति होती है।

प्रश्न 3. किसके नेत्र नीरज रूपी हैं–

(क) राम के (ख) वशिष्ठ के
(ग) कैकेयी के (घ) भरत के

उत्तर–(घ) भरत के।

अथवा

सूरदास के 'पद' की किस पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है–

(क) लत लटकनि मनु मत्त मधुप गन
(ख) घुटरुनि चलत रेतु तन मंडित
(ग) चारु कपोल लोल लोचन
(घ) कठुला कंठ वज्र केहरि नख

उत्तर–(क) लत लटकनि मनु मत्त मधुप गन।

प्रश्न 4. सूरदास के 'पद' की विशेषता नहीं है–

(क) बिंबात्मकता (ख) स्वाभाविकता
(ग) मनोरमता (घ) ऊहात्मकता

उत्तर–(घ) ऊहात्मकता।

अथवा

मीराँ के पद की विशेषता नहीं है–

(क) मुहावरों का प्रयोग (ख) प्रेम को छिपाना
(ग) दृढ़ता एवं साहस (घ) माधुर्य-भाव

उत्तर–(ख) प्रेम को छिपाना।

प्रश्न 5. 'परशुराम के उपदेश' पाठ में जाति की लगन और व्यक्ति की धुन है–

(क) वीरता (ख) भीतरी गुण
(ग) स्वतंत्रता (घ) अशनि-घात

उत्तर–(ग) स्वतंत्रता।

अथवा

'परशुराम के उपदेश' पाठ की किस पंक्ति में लाक्षणिकता है–

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिंदी–XII

निर्गुण भक्तिकाव्य (कबीर और जायसी)

1

कबीर

कवि-परिचय

हिंदी साहित्य की सुदीर्घ परंपरा में कबीर और जायसी निर्गुण भक्ति काव्य परंपरा के कवि हैं। इन्हें ज्ञान पर बल देने वाले कवियों को ज्ञानाश्रयी शाखा में रखा गया है। प्रेम पर बल देने वाले कवि प्रेमाश्रयी शाखा के अंतर्गत आते हैं। इनमें जायसी प्रमुख हैं। कबीरदास महान समाज सुधारक, कवि व संत थे। कबीर को समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के कारण "समाज सुधारक" कहा जाने लगा। कबीरदास भक्तिकाल के कवि थे, जो वैराग्य धारण करते हुए निराकार ब्रह्म की उपासना के उपदेश देते हैं।

मूल पाठ

(i) **सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।**
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार

(ii) **लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।**
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल॥

आइए समझें

दोहा–*(i)* सतगुर की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार।

प्रसंग–गुरु महिमा के प्रसंग में कबीर ने अनेक साखियाँ कही हैं। इन साखियों में गुरु को ईश्वर के समान या कभी-कभी ईश्वर से पहले माना गया है। इस साखी में गुरु को ज्ञान का स्रोत कहा गया है। वह ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान कराने वाला है।

व्याख्या–कबीर कहते हैं कि सतगुरु की महिमा अनंत है, जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उसकी कोई सीमा नहीं है। गुरु ने मुझ पर असीम उपकार करके मुझे अज्ञान के अंधेरे से निकालकर ज्ञान का मार्ग दिखाया है। मेरे गुरु ने मेरे ज्ञान चक्षु खोल दिए हैं और मुझे परमात्मा के सच्चे स्वरूप का दर्शन कराया है।

गुरु के सान्निध्य में आने के बाद हमारी दृष्टि व्यापक हो जाती है। हम सही मार्ग पर चल पड़ते हैं, इसीलिए गुरु के उपकार असीम हैं। गुरु की महिमा ने जो कि हमारे जीवन को संतुलित और व्यवस्थित बनाया है। कबीर ने गुरु को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है और उन्हें अनंत ज्ञान का भंडार माना है।

विशेष–1. गुरु को सांसारिक बंधनों से मुक्त करनेवाला स्वीकार करते हुए कहा–

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाँय
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।'

कबीर ने गुरु महिमा को बताते हुए गुरु के उपकार को स्वीकार किया। गुरु अपने अनमोल ज्ञान से हमारे जीवन को सँवारकर हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं, जीवन को नई दृष्टि देकर माया-मोह के जंजाल से मुक्त करते हैं और ईश्वर की परम आनंदमयी भक्ति की ओर प्रेरित भी करते हैं।

2. आज गुरु-शिष्य संबंधों पर नए ढंग से विचार-विमर्श की आवश्यकता है। गुरु की महिमा जानकर ही हम शिक्षा के विस्तार, ज्ञान के प्रसार और एक नई ऊर्जावान पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं। अत: कबीर की यह साखी हमारे लिए आज भी प्रासंगिक और उपयोगी है।

दोहा–*(ii)* लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल
लाली देखन में गई, मैं भी हो गई लाल॥

प्रसंग–कबीर निर्गुण ब्रह्म या ईश्वर के निर्गुण और निराकार रूप का दर्शन सर्वत्र करते हैं। इस पद में कबीर ब्रह्म की अनुभूति करते हैं और प्रत्येक कण में इस अनुभूति या प्रेम को ही देखते हैं। यहाँ ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति भी की गई है।

व्याख्या–कबीरदास यहां अपने ईश्वर के ज्ञान प्रकाश का जिक्र करते हैं। वे कहते हैं कि यह सारी भक्ति यह सारा संसार, यह सारा ज्ञान मेरे ईश्वर का ही है। मेरे लाल का ही है, जिसकी मैं पूजा करता हूं और जिधर भी देखता हूं उधर मेरे लाल ही लाल नजर आते हैं। एक छोटे से कण में भी, एक चींटी में भी,

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

एक सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों में भी मेरे लाल का ही वास है। उस ज्ञान उस प्राण उस जीव को देखने पर मुझे लाल ही लाल के दर्शन होते है और नजर आते हैं। स्वयं मुझमें भी मेरे प्रभु का वास नजर आता है।

विशेष–1. कबीर में दास्य भाव की भक्ति दिखाई देती है। वे ईश्वर को स्वामी मानते हैं।

2. कबीर को वाणी का डिक्टेटर माना गया है। उनकी भाषा में अनेक भाषाओं का मेल है। लोकभाषा का सौंदर्य और भावों की गहराई है। उनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' नाम दिया गया है।

3. अनुप्रास अलंकार की छटा है।

पाठगत प्रश्न 1.1

प्रश्न 1. कबीर किस काल के कवि थे?

(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल

(ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल

उत्तर–(ख) भक्तिकाल।

प्रश्न 2. कबीर की भक्ति किस प्रकार की थी?

(क) सख्य (ख) शृंगार

(ग) दास्य (घ) करुण

उत्तर–(ग) दास्य।

प्रश्न 3. कबीर की भाषा को क्या नाम दिया गया?

(क) सधुक्कड़ी (ग) ब्रजभाषा

(ख) अवधी (घ) हिंदी

उत्तर–(क) सधुक्कड़ी।

क्रियाकलाप 1.1

गुरु-शिष्य के संबंध में आपके क्या विचार हैं? इसे कहानी, कविता या अन्य किसी रचनात्मक रूप में प्रस्तुत करें।

उत्तर–एक दिन गुरु अपने शिष्यों के साथ दूसरे गांव जा रहे थे। रास्ते में एक नाला भी था। गुरु और शिष्यों को उस नाले को पार करके दूसरे गांव जाना था। जब गुरु के साथ सभी शिष्य नाला पार कर रहे थे, तभी गुरु के हाथ से कमंडल छूट गया और नाले में गिर गया।

गुरु वहीं रुक गए। सभी शिष्य सोचने लगे कि अब ये कमंडल कैसे निकालेंगे? इसे कौन निकालेगा? तभी एक शिष्य गांव में किसी सफाईकर्मी को खोजने के लिए चला गया, बाकी सारे शिष्य वहीं बैठ गए और कमंडल निकालने की योजना बनाने लगे। यह देखकर गुरु को बहुत दुख हुआ, क्योंकि उन्होंने सिखाया था कि अपना काम स्वयं करना चाहिए। किसी दूसरे की मदद के लिए इंतजार नहीं करना चाहिए। कमंडल गुरु भी निकाल सकते थे, लेकिन वे शिष्यों की परीक्षा लेना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने कमंडल नहीं निकाला। वे सिर्फ यह सब देख रहे थे।

काफी देर बाद एक शिष्य उठा और नाले में हाथ डालकर कमंडल खोजने लगा। जब हाथ डालने के बाद भी कमंडल नहीं मिला, तो वह स्वयं नाले में उतर गया और कमंडल खोज निकाला। यह देखकर गुरु प्रसन्न हो गए, क्योंकि शिष्य ने उनकी सीख को अपने जीवन में उतार लिया था।

संत ने उस शिष्य की प्रशंसा की और कहा कि इसी तरह हमें अपने कामों के लिए किसी दूसरे की मदद का इंतजार नहीं करना चाहिए, जो लोग दूसरों के भरोसे बैठे रहते हैं, वे कभी भी अपनी समस्याओं को हल नहीं कर पाते हैं और अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते। अपनी मदद खुद करने वाले लोग ही घर-परिवार और समाज में सम्मान हासिल करते हैं। यही सफलता का सूत्र है।

मलिक मुहम्मद जायसी

जायसी प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा के श्रेष्ठ कवि हैं। 'पद्मावत' इनकी बहुचर्चित लोकप्रिय रचना है। कुतुबन की 'मृगावती' की रचना 'पद्मावत' से पहले हो चुकी थी, किंतु यह रचना बहुत लम्बे समय तक छपकर इतिहासकारों के समक्ष नहीं आई। कुतुबन जायसी के बाद एक श्रेष्ठ कवि हैं। मंझन की 'मधुमालती' भी उसी परंपरा का एक सुंदर प्रेमाख्यान है। इस परंपरा में इन तीन कवियों के अतिरिक्त मुल्ला दाउद, उस्मान शेख नबी, सूरदास लखनवी आदि अनेक कवियों ने अपना-अपना योगदान दिया।

मूल पाठ

कै अस्तुति जब बहुत मनावा।
सबद अकूत मँडप महँ आवा॥
मानुष पेम भएउ बैकुंठी नाहिं त काह छार भरि मूठी।
पेमहिं माहँ बिरह-रस रसा। मैन के घर मधु अमृत बसा।
निसत धाइ जो मरै त काहा। सत जो करै बैठि तेहि लाहा।
एक बार जौं मन देइ सेवा सेवहि फल प्रसन्न होइ देवा।
सुनि के सबद मँडप झनकारा। बैठा आइ पुरुष के बारा।
पिंड चढ़ाई छार जेति आँटी माटी भएउ अंत जो माटी।
माटी मोल न किछु लहँ, औ माटी सब मोल
दिस्टि जौं माटी सौं करै माटी होइ अमोल।

आइए समझें

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' के 'मंडपगमन-खंड' से लिया गया है। चित्तौड़ के राजा रत्नसेन सिंहल द्वीप के राजा की पुत्री पद्मावती के अलौकिक रूप का वर्णन सुनकर मुग्ध हो गए कि जोगी का वेश बनाकर पद्मावती के दर्शन के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए सिंहलद्वीप पहुँच गए। वहाँ पद्मावती के दर्शन के लिए आकुल राजा ने शिव से प्रार्थना की है। इस चौपाई में इसी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–मनुष्य अपने नि:स्वार्थ एवं दिव्य प्रेम के कारण दिव्यता प्राप्त कर लेता है। मानव शरीर तो नश्वर और क्षणभंगुर है। मरने के बाद वह जलकर मुट्ठी भर राख के बराबर हो जाता

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य के हृदय में स्थित प्रेम ही उसे देवताओं के समान महानता प्रदान करता है। प्रेम में सब कुछ यदि संयोग का सुख है, तो वियोग का अथाह कष्ट भी है; जैसे मधुमक्खी के छत्ते में शहदरूपी अमृत है, तो डंक लगने का कष्ट भी है। अमृत प्राप्ति के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ता है।

सत्यहीन व्यक्ति रात-दिन मेहनत करके अंत में मृत्यु को प्राप्त होता है, परंतु सत्य का आचरण करने वाला व्यक्ति बैठे बिठाए ही लाभ प्राप्त करता है। कहने का तात्पर्य है कि मिथ्या आचरण करने वाले को अंत में हार मिलती है और सच्चे व्यक्ति को अंत में सुख ही सुख मिलता है। सच्चे मन से सेवा करने वाले मानव से देवता प्रसन्न हो जाते हैं। 'पद्मावत' की इन पंक्तियों में बताया गया है कि इस प्रकार की वाणी मंडप में झंकृत होने लगी। यह ध्वनि मंदिर में गूंजने लगी दिव्य वाणी को सुनकर राजा रत्नसेन श्रद्धा एवं प्रेम से भर उठे और पूर्व दिशा के द्वार पर आकर बैठ गए। प्रेम के प्रति उनका विश्वास और दृढ़ हो उठा। उन्होंने अपने शरीर पर भस्म लगा ली और सोचा कि हमारा शरीर मिट्टी है, तो अत: मैं अपने शरीर पर भस्म लगाकर यह सिद्ध कर दूँ कि यह तो मिट्टी ही है और अंत में मिट्टी में ही मिलकर इसे मिट्टी ही बन जाना है।

व्यक्ति इस शरीर को मिट्टी मान लेता है, उसकी मिट्टी अनमोल हो जाती है। कवि ने यहां सूफी दर्शन की एक विशेषता बताई है कि जो मनुष्य शरीर की नश्वरता और मृत्यु की अटलता को समझ लेता है, उसके लिए जीवन अत्यंत सुखद बन जाता है। वह शरीर को ईश्वर प्राप्ति का माध्यम बना लेता है। वह प्रेम की श्रेष्ठता को समझकर उसे प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करता है।

भाव सौंदर्य

कबीरदास ने सतगुरु के महत्त्व का वर्णन भावपूर्ण ढंग से किया है। वे गुरु महिमा की अनंतता का उल्लेख करते हैं, क्योंकि गुरु ने शिष्य की ज्ञान की अनंत दृष्टि का विस्तार कर दिया और उसे इस योग्य बना दिया कि वह अनंत सत्ता को इस ज्ञान के माध्यम से पा सके। दूसरी साखी में कबीर चारों तरफ अनंत ईश्वर की ललिमा का विस्तार देखते हैं और स्वयं के भीतर भी उसका साक्षात्कार करते हैं।

जायसी ने अपने काव्य में सूफी दर्शन को बहुत ही मार्मिक रूप में व्यक्त किया है। जायसी शरीर की नश्वरता और मृत्यु की अटलता का उल्लेख करते हुए शरीर को ईश्वर-प्राप्ति का माध्यम बनाने पर जोर देते हैं। उनका अभिप्राय है कि प्रेम के महत्त्व को पहचानकर ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।

शिल्प सौंदर्य

कबीर ने 'अनंत' शब्द का अत्यंत सार्थक प्रयोग किया है। वे 'अनंत' शब्द का संबंध ईश्वर, दृष्टि और गुरु द्वारा किए गए उपकार से जोड़ते हैं। इसी प्रकार 'लाली' शब्द से उन्होंने संसार के कण-कण में ईश्वर के अनंत स्वरूप का साक्षात्कार करवाने का प्रयास किया है।

कबीर की भाषा आम जनता की भाषा है, इसीलिए बहुत प्रभावशाली है। जायसी में कवित्व शक्ति और भाषा का सामर्थ्य अद्‌भुत है। जायसी ने पद्मावत में अलंकारों का अत्यंत स्वाभाविक एवं कुशल प्रयोग किया है।

जायसी ने मनुष्य जीवन में आने वाले विरह आनंद की तुलना अमृत और मधु से की है। देखिए–पेमहि माहँ बिरह रस रसा। मैन के घर मधु अमृत बसा। 'माँटी' शब्द के प्रयोग में कवि ने यमक की शोभा को बढ़ा दिया है।

जायसी ने अवधी भाषा का प्रयोग भी अत्यंत कुशलता से किया है। सामान्य शब्दों के प्रयोग करके भी कवि ने उनके अर्थ को महत्त्वपूर्ण बना दिया; जैसे–

मानुस पेम भयउ 'बैकुंठी'

यहाँ 'बैकुंठी' शब्द के प्रयोग से पूरी पंक्ति के अर्थ को विशिष्ट और अलौकिक स्वरूप से जोड़ दिया है। यहाँ 'बैकुंठी' कहने से मानवीय प्रेम के अलौकिक स्वरूप की अनुभूति हुई है।

जायसी ने मानव जीवन की क्षणभंगुरता एवं नश्वरता का भी उल्लेख इन पंक्तियों में किया है। सूफी काव्य में सांसारिक प्रतीकों के माध्यम से आध्यात्मिक भावों को उजागर किया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.2

प्रश्न 1. राजा रत्नसेन ने देवताओं की स्तुति किसकी प्राप्ति के लिए की–

(क) धन (ख) राज्य
(ग) पद्मावती (घ) शिव

उत्तर–(ग) पद्मावती।

प्रश्न 2. 'पद्मावत' के काव्यांश में सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है–

(क) मिट्टी को (ख) बैकुण्ठ को
(ग) प्रेम को (घ) अमरता को

उत्तर–(ग) प्रेम को।

प्रश्न 3. 'पद्मावत' महाकाव्य की भाषा है–

(क) ब्रजभाषा (ख) अवधी
(घ) सधुक्कड़ी (ग) भोजपुरी

उत्तर–(ख) अवधी।

पाठांत प्रश्न

प्रश्न 1. 'लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार' से 'कबीर' का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कबीरदास जी कहते हैं कि माया के कारण मेरी आँखें बंद पड़ी थी, सत्य मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, सतगुरु ने

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

मेरी आँखों को खोला और मुझे सत्य दिखाया, सत्य का दर्शन करवाने वाले ऐसे संत की महिमा असीमित और अपार है। कहने का तात्पर्य यह है कि सतगुरु ने हमारी अज्ञानता भरी आंखों को खोलकर ज्ञान (सत्यता) से मेल करवाया।

प्रश्न 2. 'लाली मेरे लाल की' में 'लाली' और 'लाल' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कबीरदास यहां अपने ईश्वर के ज्ञान प्रकाश का जिक्र करते हैं। वह कहते हैं कि यह सारी भक्ति यह सारा संसार, यह सारा ज्ञान मेरे ईश्वर का ही है। यहां 'लाल' से तात्पर्य ईश्वर से और 'लाली' से तात्पर्य ईश्वर की अनंत महिमा एवं स्वरूप से है।

प्रश्न 3. कबीर की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–कबीरदास ने बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। यह निर्विवाद सत्य है कि कबीरदास जी पढ़े-लिखे नहीं थे। यह बात उन्होंने स्वयं स्वीकार की है–

मसि कागद छूयो नहिं कमल गही नहिं हाथ।

भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में कहलवा लिया-बन गया है तो सीधे-सीधे, नहीं दरेरा देकर। कबीर की रचनाओं में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं, यथा–अरबी, फारसी, पंजाबी, बुन्देलखंडी, ब्रजभाषा, खड़ीबोली आदि के शब्द मिलते हैं, इसलिए इनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता है। कबीर की भाषा जनता के टकसाल से निकली है। उसमें व्याकरण और शास्त्र का आग्रह नहीं था और शायद इसीलिए कबीर अपनी भाषा के साथ हर तरह की मनमानी कर लेते थे।

प्रश्न 4. आज के समय में प्रेम के महत्त्व पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–प्रेम के बिना हमारे जीवन का अस्तित्व ही नहीं है प्रेम इंसान को स्वार्थ त्यागकर परोपकार के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रेम से ही आप एक-दूसरे को अच्छी तरह से जान सकते और एक-दूसरे को समझ सकते हैं यानी कि दो आत्माओं का मिलन ही प्यार है। प्रेम की भावना से ही आज एक इंसान दूसरे इंसान की सेवा, मदद करता है। प्रेम के कई अलग-अलग स्वरूप होते हैं, जैसे कि भाई-बहन का प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम, दोस्त का प्रेम, प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम लेकिन इन सभी प्रेमों में जगह और वक्त के अनुसार इन प्रेम का स्तर बदलता रहता है यानी प्रेम तो वही रहता है, बस उसके मायने बदल जाते हैं।

दुनिया में प्रेम ही एकमात्र ऐसी चीज है, जिसे परिभाषित नहीं किया जा सकता, जबकि कई लोग प्रेम को धरती का आरम्भ और अंत भी कहते हैं और इतना ही नहीं, बल्कि कई कवि प्रेम को सर्वोच्च गुण की उपाधि भी दे चुके हैं।

प्रेम ही भक्ति है और प्रेम ही शक्ति है। प्रेम के द्वारा ही आप ईश्वर तक पहुंच सकते हैं और सभी धर्मों में भी प्रेम को ही ईश्वर तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग बताया है। संत कबीर के अनुसार प्रेम वह चीज है, जिसे ना पैदा किया जा सकता है और ना ही प्रेम को मारा जा सकता है और ना ही धन के द्वारा उसे खरीदा जा सकता है। कालिदास के अनुसार प्रेम दो आत्माओं का मिलन है, जब दो आत्माओं का मिलन होता है, तब प्रेम का भाव का जन्म लेता है।

आज के समय में इंसान के अंदर प्रेम की भावना, प्रेम की न्यूनता की वजह से संवेदनशीलता खत्म हो चुकी है, जिसकी वजह से आज इंसान जानवरों के प्रति, पक्षियों के प्रति जो प्रेम दिखाना चाहिए, वह नहीं दिखाते, बल्कि प्रेम की कमी की वजह से इंसान मासूम जानवरों, पक्षियों को अपने स्वार्थ के लिए, अपने स्वाद के लिए तड़पा-तड़पा कर मारता है।

प्रश्न 5. माटी मोल न किछु लहे औ माटी सब मोल।
दिस्टि जौं माटी-सौं करै माटी होइ अमोल॥

यहाँ कवि ने 'माटी' शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थों में किया है?

उत्तर–हमारा शरीर मिट्टी है और इसे अंत में मिट्टी में ही मिल जाना है। अत: मैं अपने शरीर पर भस्म लगाकर यह सिद्ध कर दूँ कि यह तो मिट्टी ही है और अंत में मिट्टी में ही मिलकर इसे मिट्टी ही हो जाना है।

प्रश्न 6. 'पद्मावत' का काव्यांश हमें क्या प्रेरणा देता है?

उत्तर–पद्मावत का यह काव्यांश हमें प्रेरणा देता है कि संसार में सच्चा प्रेम ही सदा रहता है। यह शरीर नश्वर एवं क्षणभंगुर है। अत: ईश्वर के सच्चे प्रेम को पाने का प्रयास करना चाहिए और इस नश्वर शरीर की सच्चाई जानकर इसके प्रति मोह नहीं रखना चाहिए।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के गुरु की महिमा का वर्णन किस प्रकार किया है, पठित साखी के आधार पर बताइए।

उत्तर–कबीर का मत है कि गुरु ही ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान कराता है, इसलिए गुरु ईश्वर के समान श्रेष्ठ है। हम सभी माया मोह में फंसे हैं, इसलिए परम सत्ता का अहसास नहीं हो पाता। इस मोह-माया से गुरु द्वारा प्रदत्त दिव्य दृष्टि ही बाहर निकाल सकती है।

तुलसीदास ने भी गुरु महिमा के संदर्भ में लिखा है–'गुरु बिन भवनिधि तरै न कोई जो विरोच संकर सम होई' अर्थात् कोई शिव और ब्रह्मा जैसा सर्वज्ञ और महाज्ञानी ही क्यों न हो, बिना गुरु के उसकी मुक्ति संभव नहीं है।

कबीर द्वारा 'अनंत' शब्द के कई बार प्रयोग में विशेष प्रकार की सार्थकता है। अनंत ईश्वर के दर्शन हेतु अनंत लोचनों या

www.neerajbooks.com